An executive summary of the final report of the work done on the Minor Research Project of Dr Veronica Judith carlo- entitled: "Adhunik Mahila Upanyaskaro ke upanyaso me stri vimarsh" sanctioned by UGC, vide sanction letter No. MRP (H)173\12-13\KAMA002\UGC SWRO December 2013

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवत:" जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं ।मेरे लघुसोध का उद्देश्य था कि आधुनिक महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों के उपन्यासों मेंनारी का चित्रण किस प्रकार किया गया है? क्या नारी की कोई समस्याएँ हैं?कौनसी?आज की नारी इन समस्याओँ का समाधान कैसे कर रही है?क्या पुरुषों का उसे साथ मिल रहा है?-इन मुद्दों पर विचार करने के लिए मैंने कुल १० उपन्यास लिए जो १९६२ से लेकर २०१० तक प्रकशित हुए थे ।

मैने अपने लघु शोध को चार अध्यायों में विभाजित किया है । स्त्री विमर्श की अवधारणा को प्रथम अध्याय में लिया गया है । स्त्री विमर्श के अर्थ को समझाकर किस तरह पश्चिमी राष्ट्रों में इसका विकास हो गया । इस विकास का स्त्रियों के बदलते रूप पर क्या असर हो गया, भारत में स्त्री विमर्श का अर्थ क्या है ? युग के साथ किस तरह स्त्रियों की भूमिका बदल गई । इन सब विषयों पर गहन अध्ययन किया गया है । इसके साथ साथ स्त्री - विमर्श की बुनियादी मान्यताओं के ऊपर भी दृष्टि डाली गयी है ।

द्वितीय अध्याय में आलोच्य उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय देना उचित था । १६३९ से लेकर २००० तक के दस उपन्यासों को चुनने का कारण यही था कि विविधता हो । एक कतरा धूप, पचपन खंभे लाल दीवारें आपका बंटी, अपना अपना कोणार्क, माई, आवाँ कठगुलाब, छिन्नमस्ता, सूरजमुखी अंधेरे के और मैं घूमर नाचूँ - इन दस उपन्यासों का परिचय स्त्री विमर्श की दृष्टि से दिया गया है । इन दसों उपन्यासों में स्त्री के विविध रूप, विविध पात्र, उसका दर्द, खुशी, बेबसी सब सामने आए हैं ।

अध्याय तीन में आलोच्य उपन्यासों में स्त्री विमर्श के मुद्दों पर काम किया गया है । अध्याय तीन और चार शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । इस अध्याय में स्त्री - पुरुष संबंध, परिवार में स्त्री की भूमिका, पारिवेतर रिश्ते, घर - बाहर के बीच का तनाव, स्त्री की आर्थिक

स्वाबलंबन का प्रश्न, स्त्री की आजादी, स्त्री की अस्मिता और स्वतंत्रता का प्रश्न स्त्री की आकांक्षा और स्वप्न में बाधाएँ - आदि बहु मुख्य मुद्दों पर बहुत गहराई से नजर डाली गई है । नारी ने अब अपने अधिकारों एवम कर्तव्यों का उचित समन्वय करके परम्परागत भूमिकाओं का त्याग किया और नयी भूमिकाओं को अपनाया । कन्या, माता, पत्नी, तथा प्रेमिका के शाश्वत रूपों में नारी का बदलता स्वरूप दिखाई देता है । नारी की परम्परागत भूमिकाओं में जो परिवर्तन हुआ उसका विवेचन करने का प्रयास किया गया है ।

चौथे अध्याय में आलोच्य स्त्री - विमर्श के उपन्यासों की परस्पर तुलना की गई है । इस दौरान कई समानताएँ और एक दूसरे से विशिष्टता के पहलू भी सामने आए हैं । कृष्णा सोबती की रत्ती और मैं घूमर नाचूँ की कृष्णा किस प्रकार सोचती हैं ? पचपन खंभे लाल दीवारें की सुषमा का क्या दर्द है ? अपने अपने कोणार्क की कुनी और सुषमा में क्या समानता देखने को मिलती है ? इस तरह स्त्री के विविध पात्र जैसे अलग अलग चित्रित किए गए हैं इन सबका अवलोकन इस अध्याय में किया गया है ।

इन दस महिला उपन्यासकारों ने महिलाओं को संपूर्ण समस्याओं के साथ चित्रित किया है । कई नायिकाओं ने इन समस्याओं का साहस के साथ सामना किया है । समस्याओं के निवारण में जुट गयी हैं । कभी कभी सारी दुनिया का सामना अकेले करना पडा है । विद्रोही दिखने पर भी हर स्त्री अपनी मुक्ति की कोशिश में है । इन उपन्यासों की कई नायिकाएँ खुद निर्णय लेती हैं,दुविधा में नहीं रहतीं । कभी लगता है कि वे हार गयी हैं लेकिन उनकी हार में भी जीत नज़र आती है ।

सरला अग्रवाल, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, चंद्रकांता, गितांजलि श्री, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, कमल कुमार आदि के अलोच्य उपन्यासों में नायिकाओं के चरित्र चित्रण के लिए पर्याप्त स्थान मिला है । इन नायिकाओं को देखकर आजकल की नारियाँ कुछ सीख लेंगी, अपनी समस्याओं का हल ढूँढेंगी । इन महिला उपन्यासकारों के द्वारा उठाए गए कई मुद्दों की सहायता से आज की नारी अपना जीवन कुशलतापूर्वक निभा सकेगी । इन उपन्यासों में चित्रित मुद्दों के अलावा भी जीवन के ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, ऐसे अनेक अनुभव हैं, ऐसे अनेक व्यवसाय हैं जहाँ स्त्री विमर्श नहीं पहुँच पाया है । वह दिन दूर नहीं जब इन क्षेत्रों से जुडे अनुभव भी स्त्रियों के लेखन में परिलक्षित होंगे और तब साहित्य में स्त्री - विमर्श के स्वरूप पर कहीं अधिक व्यापक और गहन विचार करना अनिवार्य हो जाएगा । लेकिन मेरे आलोच्य विषय का मूल निष्कर्ष "नारी अस्मिता' को उजागर करना है ।

इन दस महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन को जिस हद तक समझा है - वह प्रंशसनीय है । आज 'स्त्री' केंद्र में है । स्त्री चेतना से जाग्रत है, स्त्री मुक्ति के प्रश्न उठाकर उससे जूझने की ताकत रखती है । स्त्री आज 'वस्तु' नहीं बल्कि मानव के रुप में जीना चाहती है । आज स्त्री हर कदम पर पुरुष के निरंकुश सत्ता का विरोध कर रही है । आधुनिक महिला उपन्यासकारों ने इन आलोच्य उपन्यासों में स्त्री की चेतना को जग्रत करने का काम बखूबी निभाया है । स्त्री मुक्ति केवल शब्द नहीं रह गयी है, बल्कि उसे व्यवहार में लाने की कोशिश जारी रखी है । स्त्री को महिमा मंडित होकर जीना नहीं है, उसका अपना जीवन - ध्येय है, लक्ष्य है, वह पूरी तरह अपने अस्तित्व के साथ जीकर अपने जीवन का सपना साकार करना चाहती है । इस कार्य में अगर पुरुष उसका साथ बिना शर्त के देगा तो उसकी सफलता पूर्ण होगी ।

Date: 30-04-2015 **Dr V.J.Carlo**